HINDI

हिन्दी

PAPER—III

प्रश्न-पत्र—III

नोट : इस प्रश्नपत्र में **दो** खण्ड (अ एवं ब) हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

खण्ड—अ

(लघु निबंधवत् उत्तरलक्षी प्रश्न)

नोट : इस खण्ड में दस निबंधवत् उत्तरलक्षी प्रश्न हैं, जिनके उत्तर लगभग **तीन सौ** शब्दों में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न के 16 अंक हैं।

www.examrace.com

खण्ड — अ

1. भक्ति साहित्य के विकास में सिद्ध-नाथ साहित्य के योगदान का आकलन कीजिए।

अथवा

कबीर की भक्ति भावना के सामाजिक पक्ष का उद्घाटन कीजिए।

www.examrace.com

2. भूषण के काव्य की अंतर्वस्तु में रीति-तत्व पर प्रकाश डालिए।

अथवा

'सतसैया के दोहरे ज्यों नावक के तीर' – इस कथन के आलोक में बिहारी की काव्य कला की परीक्षा कीजिए।

www.examrace.com

3. भारतेन्दु की रचनाओं में पुनर्जागरण की चेतना का स्वरूप स्पष्ट कीजिए।

अथवा

छायावाद पर गाँधीवाद के प्रभाव का आकलन कीजिए।

www.examrace.com

4. 'भावसंवाद' प्रगतिवादी साहित्य का वैचारिक आधार है विचार कीजिए।

अथवा

प्रयोगवाद की प्रयोगधर्मिता विशेष रूप से काव्य भाषा स्तर तक सीमित रही – इस कथन के औचित्य की परीक्षा कीजिए।

www.examrace.com

5. हिन्दी उपन्यास-यात्रा में 'चंद्रकान्ता' के योगदान को स्पष्ट कीजिए।

अथवा

'शेखर एक जीवनी' के शिल्पगत वैशिष्ट्य का विवेचन कीजिए।

www.examrace.com

6. 'अंधेर नगरी' नाटक की समसामयिकता पर विचार कीजिए।

अथवा

चंद्रगुप्त नाटक की सामाजिक-सांस्कृतिक चेतना का उद्घाटन कीजिए।

www.examrace.com

7. भट्ट नायक की 'रस–निष्पत्ति' विषयक व्याख्या के महत्व पर प्रकाश डालिए।

अथवा

रस ध्वनि से आप क्या समझते हैं— स्पष्ट कीजिए।

www.examrace.com

8. 'नयी समीक्षा' की प्रमुख अवधारणाओं का परिचय दीजिए।

अथवा

पाश्चात्य काव्यशास्त्र में लॉजाइनस के विशिष्ट योगदान का निरूपण कीजिए।

www.examrace.com

9. संदर्भ-प्रसंग निर्देश करते हुए निम्नलिखित अवतरण की आलोचनात्मक व्याख्या कीजिए।

करहिं बनसपति हिये हुलासू। मो कँह भा जग दून उदासू ।।
फागु करहिं सब चाँचरि जोरी। मोहि तन लाइ दीन्ह जस होरी।।
जो पै पीउ जरत अस पावा। जरत मरत मोहि रोष न आवा।।
रति दिवस बस यह जिउ मोरे। लगौं निहोर कंत अब तोरे।।
यह तन जारौं छारि के, कहौं कि पवन! उड़ाव।
मकु तेहि मारग उड़ि परै, कंत धरै जहँ पाँव।।

अथवा

तीर से खींचा धनुष मैं राम का।
काम का –
पड़ा कंधे पर हूँ बलराम का ।
सुबह का सूरज हूँ मैं ही
चाँद मैं ही शाम का
कलजुगी मैं ढाल
नाव का मैं तला नीचे और ऊपर पाल।

www.examrace.com

10. संदर्भ-प्रसंग निर्देश करते हुए निम्नलिखित अवतरण की आलोचनात्मक व्याख्या कीजिए।

ब्राह्मणत्व एक सार्वभौम सृष्टि वैभव है। वह अपनी रक्षा के लिए, पुष्टि के लिए और सेवा के लिए इतर वर्णों का संगठन कर लेगा। राजन्य-संस्कृति से पूर्ण मनुष्य को मूर्धाभिषिक्त बनाने में दोष क्या है ?

अथवा

मुझे उस असलियत की बात करने दीजिए जिसे मैं जानती हूँ ..... एक आदमी है। घर बसाता है। क्यों बसाता है ? अपने अंदर के किसी उसको ..... एक अधूरापन कह लीजिए उसे ..... उसको भर सकने को। इस तरह उसे अपने लिए ..... अपने में ..... पूरा होना होता है। किसी दूसरे को पूरा करने खातिर जिन्दगी नहीं काटनी होती है।

www.examrace.com

खण्ड – ब

नोट : इस भाग में केवल **एक** दीर्घ निबंधात्मक उत्तरवाला प्रश्न 40 अंक का है, जिसका उत्तर लगभग (800) आठ- सौ शब्दों में दीजिए।

11. भक्ति काव्य में भक्ति के माध्यम से लोक जागरण का विराट प्रयत्न किया गया है – विचार कीजिए।

अथवा

नूतन सांस्कृतिक-चेतना का उद्भास और स्वतंत्र जीवन-दर्शन का नियोजन छायावाद की महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है— इस कथन की परीक्षा कीजिए।

अथवा

हिन्दी कथा-साहित्य में स्त्री-विमर्श और दलित-विमर्श की स्थिति का परिचय दीजिए।

अथवा

'रमणीयार्थ प्रतिपादकः शब्दः काव्यम्' के आलोक में काव्य-लक्षण की भारतीय अवधारणा का विवेचन कीजिए।

www.examrace.com